चेतन भगत

2 स्टेट्स

मेरी शादी की कहानी

दो स्टेट

चेतन भगत ने पांच बेस्टसेलिंग नॉवल लिखे हैं—फाइव पॉइंट समवन (2004), वन नाइट @ द कॉल सेंटर (2005), द थ्री मिस्टेक्स ऑफ़ माय लाइफ़ (2008), *2 स्टेट्स : द स्टोरी ऑफ़ माय मैरिज* (2009) और रेवॉल्युशन 2020 (2011)

चेतन की किताबें अपनी रिलीज़ के बाद से ही बेस्टसेलर्स की सूची में बनी हुई हैं। उन पर फिल्में भी बनाई गई हैं। द न्यूयॉर्क टाइम्स ने उन्हें 'भारत के इतिहास में सबसे ज़्यादा बिकने वाला अंग्रेजी नॉवेलिस्ट' बताया है। टाइम पत्रिका ने उन्हें 'दुनिया के सौ सर्वाधिक प्रभावशाली लोगों' की फेहरिस्त में शामिल किया है और अमेरिका की फास्ट कंपनी ने उन्हें 'दुनिया के शीर्ष सौ रचनात्मक लोगों' में से एक माना है।

चेतन भारत के शीर्ष अंग्रेजी और हिंदी अख़बारों में लिखते हैं और उनका फोकस युवाओं और देश की विकास संबंधी समस्याओं पर रहता है। वे मोटिवेशनल स्पीकर भी हैं।

चेतन ने वर्ष 2009 में अपने इंटरनैशनल इंवेस्टमेंट बैंकिंग कैरियर को अलविदा कह दिया, ताकि अपना पूरा समय लेखन और देश में बदलाव लाने की कोशिशों के लिए दे सकें। वे मुंबई में अपनी पत्नी अनुषा, जो उनकी आईआईएम-ए की एक्स-क्लासमेट हैं, और दो जुड़वा बेटों श्याम और ईशान के साथ रहते हैं।

चेतन के बारे में और जानने के लिए www.chetanbhagat.com देखें या उन्हें info@chetanbhagat.com पर ईमेल करें।

Text copyright © 2016 by Chetan Bhagat

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without express written permission of the publisher.

Published by Amazon Publishing, Seattle

www.apub.com

Amazon, the Amazon logo, and Amazon Publishing are trademarks of Amazon.com, Inc., or its affiliates.

eISBN: 9781503945951

शायद किताबों के इतिहास में ऐसा पहली बार हो रहा होगा, फिर भी:

मेरे ससुरालवालों के लिए*

*लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं दब्बू या जोरू का गुलाम हूँ या मेरे पुरुषत्व में कोई कमी है।

आभार

दुनिया में कोई भी सृजन किसी एक व्यक्ति का काम नहीं होता। यह किताब भी अपवाद नहीं है। ड्राफ़्ट की ज़ेरॉक्स कॉपी बनाने वाले व्यक्ति से लेकर इस किताब को दुकानों तक पहुंचाने वाले डिलिवरी ब्वॉय तक, सभी की इसमें अपनी एक भूमिका है। फिर भी, मैं इन लोगों का शुक्रिया अदा करना चाहूंगा:

- मेरे पाठकों, यानी आपका, जिन्होंने मुझे आज इस मुक़ाम पर पहुंचाया। पिछली बार मैंने कहा था कि मैं भारत का सबसे लोकप्रिय लेखक बनना चाहता हूँ— और आप लोगों ने इसे संभव कर दिखाया है। शुक्रिया। कृपया अपना सहयोग जारी रखें और यदि मुमकिन हो तो अपने दिल में मुझे एक छोटी-सी लेकिन स्थायी जगह दीजिए।

- ईश्वर का, उनके प्रेम और आशीर्वाद के लिए।
- शाइनी एंटनी का, जो मेरी हर किताब की पहली पाठक और संपादक हैं। वे मुझे यह बताती हैं कि केवल किताब में ही नहीं, बल्कि ज़िन्दगी में भी, क्या कारगर है और क्या नहीं।
- अभिषेक कपूर का, उनके अद्‌भुत सुझावों के लिए। प्रतीक धवन, शांभवी किरावंत, रतिका कौल-हकसर और अनुषा भगत का, किताब की पांडुलिपि पर बेहतरीन टिप्पणियां करने के लिए।
- मेरे प्रकाशक रूपा एंड कंपनी का, मेरी कहानियों को देश पर में पहुंचाने के लिए।
- कॉलेज के दोस्तों, दोयचे बैंक और गोल्डमैन सैश के साथियों और मुंबई के मौजूदा मित्रों का।
- उन अख़बारों का, जो मेरे कॉलम छापते हैं और मुझे एक ऐसे नए प्रगतिशील भारत के बारे में अपने विचार पाठकों से साझा करने का मौक़ा देते हैं जिसका मैं लगातार सपना देखता हूं।
- उन फ़िल्मकारों का, जिन्होंने मेरी कहानियों से प्रेरित होकर उन्हें परदे पर जीवंत करने के लिए सालों मेहनत की।

मैं कुछ अन्य बातें भी स्पष्ट करना चाहूंगा। पहली बात यह कि कहानी मेरे अपने जीवन और पारिवारिक अनुभवों से प्रेरित है, लेकिन इस किताब को फिक्शान की तरह ही देखा जाना चाहिए। प्रामाणिकता के लिए मैंने कुछ वास्तविक स्थानों, व्यक्तियों और संस्थानों के नामों का भी उपयोग किया है, क्योंकि वे मौजूदा समय के सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे मेरी कहानी में भी मदद करते हैं। इसके पीछे मेरी और कोई मंशा नहीं है। मैं सभी दक्षिण भारतीयों से भी कहना चाहूंगा कि मैं उनसे प्रेम करता हूं। मेरी पत्नी इसे प्रमाणित कर सकती है। अगर मैंने आपके और पंजाबियों के साथ थोड़ा-बहुत मज़ाक़ करने की छूट ली है तो इसकी वजह यही है कि मैं आपको अपना मानता हूं। हम केवल उन्हीं लोगों के साथ थोड़ी हँसी-ठिठोली करते हैं, जिनकी हम फ़िक्र करते हैं।

इसी के साथ, मैं दो स्टेट में आपका स्वागत करता हूं।

प्रस्तवना

‘मुझे यहां क्यों भेजा गया है? मैं बिलकुल ठीक हूं,’ मैंने कहा।

उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। बस इशारे से बताया कि मैं अपने जूते निकालकर काउच पर बैठ जाऊं। उसका दफ़्तर किसी डॉक्टर के दफ़्तर जैसा ही था, बस उसमें दवाइयों की गंध, सर्दीलापन और ख़तरनाक औज़ार नहीं थे।

वह इंतज़ार करती रही कि मैं और कुछ कहूं। मैं थोड़ा झिझका और फिर बोलने लगा। 'मुझे पक्का पता है कि लोग यहां बड़ी-बड़ी मुसीबतों के बोझ तले दबे आते हैं। लड़कियां अपने बॉयफ्रेंड्स डंप कर देती हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि इसके लिए किसी दिमाग़ के डॉक्टर को दिखाया जाए। आपको क्या लगता है, मैं साइको हूं?'

‘नहीं, साइको मैं हूं। साइकोथैरेपिस्ट, टु बी प्रिसाइस। यदि तुम्हें हर्ज़ न हो तो मैं दिमाग़ के डॉक्टर की तुलना में साइकोथैरेपिस्ट कहलाना ज़्यादा पसंद करूंगी, 'उसने कहा।

‘सॉरी,’ मैंने कहा।

‘इट्स ओके,’ उसने कहा और कुर्सी से टिककर बैठ गई। उसकी उम्र तीस से ज़्यादा न रही होगी। उसे देखकर लगता नहीं था कि वह दिमाग़ की डॉक्टर, सॉरी, साइकोथैरेपिस्ट होगी। दीवारों पर टॉप अमेरिकी यूनिवर्सिटियों के सर्टिफिकेट कुछ यूँ शान से सजे थे, जैसे शिकारियों के घर बाघ के सिर सजे होते हैं। जी हाँ, एक और साउथ इंडियन ने एकेडेमिक्स की दुनिया में अपना झंडा गाड़ दिया था। डॉ नीता अय्यर, वेलडिक्टोरियन, वस्सार कॉलेज।

‘मैं हर घंटे का पाँच सौ रुपया चार्ज लेती हूं,’ उसने कहा। 'अब यह तुम पर है, चाहो तो दीवारों को घूरते रहो या मुझसे बात करो।'

मैं बिना किसी नतीजे पर पहुँचे बारह मिनट यानी सौ रुपए ख़र्च कर चुका था। मैं सोचने लगा कि अगर मैं जाना चाहूँ तो क्या वह थोडी-सी फ़ीस लेकर मुझे जाने देगी?

‘डॉ. अय्यर...

‘आप मुझे नीता कह सकते हैं,’ उसने कहा।

‘ओके, नीता, मुझे नहीं लगता मेरी प्रॉब्लम इतनी सीरियस है। पता नहीं डॉ. रामचंद्रन ने मुझे यहां क्यों भेज दिया है।'

उसने डेस्क से मेरी फ़ाइल उठाई। 'देखते हैं। डॉ. राम ने मुझे यह ब्रीफ़ किया है—मरीज़ को नींद नहीं आती, पिछले एक हफ़्ते से उसने किसी से संपर्क नहीं किया है, वह कुछ खा भी नहीं रहा है और उसने ख़ुदकुशी करने के बेहतरीन तरीक़ों के बारे में गूगल-सर्च की है।’ वह रुकी और भौंहें उठाते हुए मेरी तरफ़ देखा।

‘मैं गूगल पर हर तरह की चीज़े सर्च करता हूं,’ मैंने बुदबुदाते हुए कहा, 'क्या आप ऐसा नहीं करतीं?'

‘रिपोर्ट कहती है कि महज़ उसके नाम, उसके आस-पड़ोस के लोगों या उससे जुड़ी किसी भी चीज़, जैसे उसकी फ़ेवरेट डिश का ज़िक्र भर होने पर ही आपके भीतर कई तरह की भावनाएँ उमड़ती हैं। आंसू, गुस्सा, झल्लाहट... किसी भी तरह की कोई भी भावना।'

‘मेरा ब्रेक-अप हुआ है। ऐसे में आप और क्या उम्मीद कर सकती हैं?’ अब मैं असहज होने लगा था।

‘यक़ीनन, अनन्या से ब्रेक-अप, जो मयलापुर में रहती है। उसकी फ़ेवरेट डिश क्या है? कर्ड राइस?'

मैं सीधे उठ खड़ा हुआ। 'डोंट, 'मैंने कमज़ोर-से स्वर में कहा। मेरा गला रुंध रहा था, लेकिन मैं अपने आंसू पी गया। 'डोंट,’ मैंने फिर कहा।

‘डोंट क्या?’ नीरा ने मुझे कुरेदते हुए पूछा, 'माइनर प्रॉब्लम, है ना?'

‘माइनर की ऐसी-तैसी। यहां मेरी जान पर बन आई है।’ मैं हैरान-परेशान-सा खड़ा रहा।

‘क्या तुम साउथ इंडियंस समझते भी हो कि इमोशंस क्या होती हैं?'

‘मैं इस नस्लवादी कमेंट को नज़रअंदाज़ कर रही हूं। तुम खड़े-खडे बात कर सकते हो, लेकिन यदि तुम्हारी कहानी लंबी है तो तुम काउच पर आराम से बैठकर भी बोल सकते हो। मैं पूरी कहानी सुनना चाहती हूं,’ उसने कहा।

मैं अपने आँसुओं को नहीं रोक सका। 'आखिर यह मेरे साथ ही क्यों हुआ?’ मैंने सुबकते हुए कहा।

उसने एक टिशू आगे बढ़ाया।

‘कहा से शुरू करूं?’ मैंने कहा और काउच पर ऐहतियात से बैठ गया।

‘वहीं से, जहाँ से हर प्रेम कहानी शुरू होती है। जब तुम उससे पहली बार मिले थे, ‘उसने कहा।

उसने परदे खींच दिए और एयर-कंडीशनर चालू कर दिया। मैंने बोलना शुरू कर दिया। अब मैं अपने पैसों का सही इस्तेमाल कर रहा था।

अंक 1 : अहमदाबाद

1

वह आईआईएमए मेस की लंच लाइन में मुझसे दो कदम आगे खड़ी थी। मैंने आँख के कोने से उस पर नज़र डाली। मैं सोच रहा था कि आखिर इस साउथ इंडियन लड़की के इतने चर्चे क्यों हैं।

उसने जैसे ही किसी भूखे रिफ़्यूजी की तरह अंगुलियों से स्टील की प्लेट पर थपकियां देनी शुरू की, कमर तक आने वाले उसके बाल लहराने लगे। मैंने ग़ौर से देखा। उसकी गोरी-सी गर्दन के पीछे वाले हिस्से में तीन काले धागे थे। देश के सबसे पढ़ाकू बी-स्कूल में एक लड़की ऐसी भी थी, जिसे सजने-संवरने से कोई ऐतराज़ न था।

'अनन्या स्वामीनाथन–फ्रेशर बैच की बेस्ट गर्ल,' सीनियर्स पहले ही डोर्म बोर्ड पर उसका नामकरण कर चुके थे। दो सौ स्टूडेंट्स की बैच में केवल बीस लड़कियां थीं। उनमें भी गुड लुकिंग लड़कियां इनी-गिनी ही थीं। आखिर आईआईएम में लड़कियों का चयन उनके लुक्स के आधार पर नहीं होता। उनका चयन इसलिए होता है, क्योंकि वे देश की 99.9 फ़ीसदी आबादी की तुलना में ज़्यादा तेज़ गति से मैथ्स की प्रॉब्लम्स सुलझा लेती हैं और सीएटी पास कर लेती हैं। आईआईएम की अधिकांश लड़कियां मेक-अप, फिटिंग कपड़े, कॉन्टैक्स लेंसेस, फ़ेशियल हेयर रिमूवल, बॉडी ऑडर जैसी तुच्छ चीज़ों से परे होती हैं। ऐसे में यदि भूल से अनन्या जैसी कोई लड़की आईआईएम में आ जाए तो वह पुरुष यौन हॉर्मोन्स से भरपूर और स्त्री यौन हार्मोन्स की किल्लत से जूझ रहे हमारे कैम्पस के लिए फ़ौरन सपनों की रानी बन जाती है।

मैंने कल्पना की कि मिस स्वामीनाथन को पिछले एक हफ़्ते में लड़कों की जितनी अटेंशन मिली होगी, उतनी उसे पूरे जीवन में नहीं मिली होगी। लिहाज़ा, मैंने मान लिया कि वह पहले ही बहुत उखड़ी हुई होगी और ऐसे में उसे इग्नोर करना ही ठीक होगा। स्टूडेंट्स ऑटो-पायलट पर इंच-दर-इंच आगे सरक रहे थे। ऊबे हुए किचन स्टाफ़ को इस बात की कतई फिक्र नहीं थी कि वे क़ैदियों को खाना परोस रहे हैं या आने वाले कल के सीईओज़ को। वे एक के बाद एक करछियां भरकर वह तरल पदार्थ स्टूडेंट्स की प्लेट में उड़ेले जा रहे थे।

ज़ाहिर है, मिस बेस्ट गर्ल को थोड़ी तवज्जो की ज़रूरत महसूस हो रही थी।

'यह रसम नहीं है। यह और चाहे कुछ भी हो, लेकिन यह रसम तो क़तई नहीं है। और वह क्या है, वह गढ़ा पीला पदार्थ?'

'सांभर,' मेस वर्कर ने लगभग गुर्राते हुए कहा।

'ऊह, कितना गंदा लग रहा है! तुमने यह कैसे बनाया है?' उसने पूछा।

'तुम्हें सांभर चाहिए या नहीं?' मेस वर्कर ने कहा। उसकी दिलचस्पी रेसीपी पर बहस करने से ज़्यादा अपना काम ख़त्म करने में थी।

मैडम सोचती रहीं। हमारे बीच खड़े दो लड़कों ने काउंटर की ओर प्लेटें बढ़ा दीं, बिना कोई टीका-टिप्पणी किए खाना लिया और आगे बढ़ गए। अब मैं उसके ठीक पीछे था। मैंने कनखियों से उसे देखा, यक़ीनन, वह औसत से बेहतर थी। वास्तव में वह औसत से कहीं बेहतर थी। वास्तव में आईआईएमए के स्टैंडर्ड्स से वह कहीं ऊपर थी। उसके फ़ीचर्स पेरफ़ेक्ट थे। आखें, नाक, होंठ कान सभी सही आकार के थे और सही जगह पर थे। आखिर किसी व्यक्ति को ये चीज़ें ही तो ख़ूबसूरत बनाती हैं–उसके शरीर के सामान्य हिस्से–फिर भी कुदरत अक्सर इसमें गड़बड़ क्यों कर जाती है? उसके माथे पर सजी छोटी-सी नीली बिंदी उसकी आसमानी और सफ़ेद सलवार कमीज़ से मेल खा रही थी। वह श्री देवी की स्मार्ट कज़िन जैसी लग रही थी।

मेस वर्कर ने वह पीला पदार्थ मेरी प्लेट में परोस दिया।

'एक्सक्यूज़ मी, मैं इनसे पहले हूं,' उसने मेस वर्कर को अपनी बड़ी-बड़ी आत्मविश्वास से भरी आँखों से बेधते हुए कहा।

'आप चाहती क्या हैं?' मेस वर्कर ने भारी साउथ इंडियन लहज़े के साथ कहा। 'आप रसम को रसम मानने को तैयार नहीं हैं। आप मेरे सांभर को देखकर मुंह बना रही हैं। मैं सैकड़ों स्टूडेंट्स को खाना खिलाता है, वे तो कभी कोई शिकायत नहीं करते।'

'और इसीलिए तुममें कोई इंप्रूवमेंट नहीं है। शायद उन्हें शिक़ायतें करनी चाहिए,' उसने कहा।

मेस वर्कर ने सांभर की देगची में कड़छी पटकी और हाथ फेंकते हुए बोला, 'आप चाहती हैं कि मेरी शिक़ायत की जाए? जाइए, मेस मैनेजर के पास जाइए और मेरी शिकायत कर दीजिए... आजकल के स्टूडेंट्स को तो देखो,' मेस वर्कर ने सहानुभूति की अपेक्षा के साथ मेरी तरफ़ देखा।

मैंने लगभग सिर हिलाकर सहमति जताई।

उसने मेरी तरफ़ देखा। 'क्या तुम यह खा सकते हो?' वह जानना चाहती थी। 'कोशिश करो।'

मैंने चम्मचभर सांभर लिया। गर्म और नमकीन, वह यक़ीनन बहुत लज़ीज़ नहीं था, लेकिन यदि आपके पास और कोई विकल्प न हो तो आप उससे अपना काम चला सकते थे। मैं लंच के तौर पर उसका इस्तेमाल कर सकता था, आखिर मैं होस्टल में चार साल जो रहा था।

बहरहाल, मैंने उसके चेहरे की ओर देखा। उसके चेहरे पर गुलाबी रंगत आ गई थी और वह अब और ख़ूबसूरत लग रही थी। मैंने पचास-एक साल उम्र वाले मेस वर्कर से उसकी तुलना की। मेस वर्कर ने लुंगी पहन रखी थी और उसकी छाती पर सफ़ेद बाल देखे जा सकते थे। संशय की स्थिति में ख़ूबसूरत लड़कियां हमेशा सही विकल्प होती हैं।

'वाक़ई, बहुत ख़राब है,' मैंने कहा।

'देखा,' उसने बच्चों सरीखे उत्साह से कहा।

मेस वर्कर ने मुझे घूरकर देखा।

'लेकिन मैं इससे अपना काम चला सकता हूं,' मैंने उसे सांत्वना देने की कोशिश करते हुए आगे जोड़ दिया।

मेस वर्कर धीमे-से कुछ बुदबुदाया और प्लेट में ढेर सारा चावल उड़ेल दिया।

'आपको जो पसंद हो, वह ले लीजिए,' मैंने उससे नज़रें बचाते हुए कहा। पिछले कुछ दिनों में पूरा कैम्पस उसे आंखें फाड़-

फाड़कर देख चुका था, मैं उन सबसे अलग नज़र आना चाहता था।
‘मुझे रसगुल्ले दे दो,’ उसने मिठाई की ओर इशारा करते हुए कहा।
‘मिठाई खाने के बाद मिलेगी,’ मेस वर्कर ने कहा।
‘तुम क्या मेरी मां हो? मेरा लंच हो गया। मुझे दो रसगुल्ले चाहिए,’ उसने ज़ोर देते हुए कहा।
‘एक स्टूडेंट को एक ही रसगुल्ला मिलेगा,’ उसने उसकी प्लेट में रसगुल्ले वाली कटोरी रखते हुए कहा।
‘ओह, कम ऑन, इस गंदे सांभर के लिए लिमिट नहीं है, लेकिन जो इकलौती चीज़ खाने लायक़ है, उस पर पाबंदियां हैं,’ उसने कहा। क़तार लंबी होती जा रही थी, लेकिन क़तार में खड़े लड़कों को कोई ऐतराज़ न था। आखिर उन्हें बैच की सबसे ख़ूबसूरत लड़की को निहारने का एक जायज़ मौक़ा जो मिल रहा था।
‘मेरा रसगुल्ला भी इन्हें दे दो,’ मैंने कह तो दिया, लेकिन कहते ही मुझे ज़रा-सा अफ़सोस भी हुआ। वह तुम्हारे साथ कभी डेटिंग नहीं करेगी, उल्टे तुम्हारा एक रस्सगुला भी ज़ाया हो जाएगा, मैंने ख़ुद को कोसते हुए कहा।
‘मैं तुम्हें एक रसगुल्ला दे रहा हूं,’ मेस वर्कर ने मेरी प्लेट में मिठाई परोसते हुए विजयी भाव से कहा।
मैंने अपनी कटोरी उसकी ओर बढ़ा दी। उसने दो रसगुल्ले लिए और क़तार से बाहर चली गई।
ओके बडी, प्रिटी गर्ल अपने रास्ते और बिना रसगुल्ले वाला लूज़र अपने रास्ते। बैठने के लिए कोई कोना तलाश लो, मैंने ख़ुद से कहा।
वह मेरी ओर मुड़ी। उसने मुझे अपने साथ बैठने को तो नहीं कहा, लेकिन उसे देखकर लग रहा था कि यदि मैं उसके पास जाकर बैठ जाता हूं तो उसे कोई ऐतराज़ न होगा। उसने अपनी नन्ही-सी अंगुली से एक टेबल की ओर इशारा किया और हम आमने-सामने बैठ गए। पूरा मेस हमें घूर-घूरकर देख रहा था। वे सोच रहे थे कि आखिर मैंने ऐसा कौन-सा तीर मार दिया, जो वह मेरे साथ बैठी है। मैं उन्हें बताना चाहता था कि मैंने कितनी बड़ी कुर्बानी दी है–मेरा एक रसगुल्ला।
‘आई एम क्रिश,’ मैंने सांभर में चम्मच घुमाते हुए कहा।
‘आई एम अनन्या। ऊंह, कितना ख़राब है ना? ‘सांभर चखने के बाद मेरे द्वारा मुंह बनाने पर उसने कहा।
‘मैं होस्टल के खाने का आदी हूँ,’ मैंने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैंने इससे भी बदतर खाना खाया है।'
‘इससे भी बदतर की तो कल्पना करनी ही मुश्किल है,’ उसने कहा।
एक हरी मिर्च कुतरने के कारण मुझे खांसी आ गई। उसके पास पानी का जग रखा था। उसने जग उठाया, आगे झुकी और मेरे गिलास में पानी पड़ेल दिया। मुझे लगा जैसे पूरे मेस ने आह भरी हो। हम दोनों सभी के लिए मैटिनी शो बन चुके थे।
उसने चार कौर में दोनों रसगुल्ले ख़त्म कर दिए। 'मुझे अब भी भूख लग रही है। मैंने आज नाश्ता भी नहीं किया है।'
‘या तो बेस्वाद खाना खाओ या भूखे मरो, होस्टल लाइफ़ का मतलब ही यही है कि जो आसानी से मिल जाए, वही सही’, मैंने कहा।
‘तुम कहीं बाहर जाना चाहते हो? मुझे पक्का यक़ीन है कि इस शहर में ख़ूबसूरत रेस्टोरेंट्स होंगे,’ उसने कहा।
‘अभी?’ एक घंटे बाद हमारी एक क्लास थी। लेकिन मिस बेस्ट गर्ल ने अपनी पेटपूजा के लिए ही सही, पर मेरे सामने बाहर चलने का प्रस्ताव रखा था। और जैसा कि सभी जानते हैं, लडकियों का दर्जा हमेशा पढ़ाई से ऊपर ही होता है।
'अब मुझे यह मत कहना कि तुम लेक्चर अटेंड करने के लिए बेचैन हुए जा रहे हो,’ उसने कहा और मुझे चुनौती देते हुए उठ खड़ी हुई।
मैंने चम्मच में थोड़े-से चावल लिए।
उसने अपना पैर पटका। 'यह गंदी चीज़ छोड़ो।'
जब मैं आईआईएमए में पॉपुलर वोट से बेस्ट गर्ल मानी गई मिस अनन्या स्वामीनाथन के साथ मेस से बाहर निकला, तब चार सौ आखें हमारा पीछा कर रही थीं।

‘तुम्हें चिकन पसंद है?’ उसने मुझसे पूछा। मेनू उसकी नाक पर टिका हुआ था। हम टोपाज़ में आए थे: एक मामूली, ख़ाली-ख़ाली-सा, लेकिन एयर कंडीशंड रेस्टोरेंट, जो कैम्पस से आधा किलोमीटर के फ़ासले पर था। सभी मिड-रेंज भारतीय रेस्टोरेंट्स की तरह यहां भी पुराने हिंदी गानों के बोरिंग इंस्ट्रुमेंटल वर्जन बज रहे थे और टेबल पर कतरे हुए मसालेदार प्याज़ सजे थे।
‘मैंने तो सोचा था कि अहमदाबाद वेजिटेरियन है,’ मैंने कहा।
‘प्लीज़, नहीं तो मैं मर ही जाऊंगी।’ वह वेटर की ओर मुड़ी और रूमाली रोटियों के-साथ हाफ़ तंदूरी चिकन का ऑर्डर किया।
‘क्या यहाँ बीयर मिलेगी?’ उसने वेटर से पूछा।
वेटर ने मानो दहशत में अपना सिर हिलाया और वहां से चला गया।
‘हम गुज़रात में हैं। यहां शराब पर पाबंदी है,’ मैंने कहा।
‘क्यों?'
‘गांधीजी का जन्मस्थान', मैंने कहा।
‘लेकिन गांधीजी ने तो हमें आजादी दिलाई थी,’ उसने प्याज की कतरनों के साथ खेलते हुए कहा। 'अगर पाबंदियों ही लगाई जानी हैं तो आजादी का क्या मतलब?’
‘पॉइंट तो है, 'मैंने कहा। 'तो, आप रसम और सांभर की एक्सपर्ट हैं। क्या आप साउथ इंडियन हैं?'
‘तमिल, प्लीज़ बी प्रिसाइस। इन फेंक, तमिल ब्राह्मण, जो कि तमिलों से बहुत अलग होते हैं। यह हमेशा याद रखना।’ वेटर ने खाना परोसा, तो वह पीछे हट गई। उसने दांतों से चिकन की लेग को काटकर अलग कर दिया।
‘और तमिल ब्राह्मण एग्ज़ैक्टली कितने अलग होते हैं?'

‘वेल, सबसे पहली बात तो यह कि नो मीट एंड नो ड्रिंकिंग,’ उसने चिकन लेग से हवा में क्रॉस का निशान बनाते हुए कहा।
‘बिल्कुल,’ मैंने कहा।
वह हँस पड़ी। मैंने यह नहीं कहा कि मैं एक प्रैक्टिसिंग तमिल ब्राह्मण हूं। लेकिन तुम्हें यह पता होना चाहिए कि मेरा जन्म शुद्धतम और उच्चतम जाति समुदाय में हुआ है। और तुम, कॉमनर? '
‘मैं पंजाबी हूं, हालांकि मैं कभी पंजाब में नहीं रहा। मेरी परवरिश दिल्ली में हुई। और मुझे अपनी जाति के बारे में कुछ नहीं पता है, लेकिन हम चिकन खाते हैं। ख़राब सांभर के लिए मेरी पाचन शक्ति तमिल ब्राह्मणों से बेहतर है,’ मैंने कहा।
‘यू आर फ़नी,’ उसने मेरा हाथ थपथपाते हुए कहा। मुझे वह थपथपाहट अच्छी लगी।
‘तो तुम होस्टल में कहां रहे थे?’ उसने कहा। 'प्लीज़, आईआईटी मत कहना, अभी तक तुमने ज़्यादा ग़लतियाँ नहीं की हैं।'
‘आईआईटी में क्या ग़लत है?'
‘कुछ नहीं, क्या तुम आईआईटी से हो? ‘उसने एक घूंट पानी पीते हुए कहा।
‘हाँ, आईआईटी दिल्ली से। कोई प्रॉब्लम? '
‘नहीं, ‘वह मुस्कुरा दी,’ ‘अभी तक तो नहीं। '
‘एक्सक्यूज़ मी?’ मैंने कहा। उसके श्रेष्ठता बोध से अब मैं असहज महसूस करने लगा था।
‘कुछ नहीं, ‘उसने कहा।
हम चुप रहे।
‘क्या बात है? क्या किसी आईआईटीयन ने तुम्हारा दिल तोड़ दिया है?'
वह हँस पड़ी। 'नहीं, हक़ीकत इससे उलटी है। शायद मैंने ही कुछ आईआईटीयंस के दिल तोड़े हैं अलबत्ता इसमें मेरा कोई क़सूर नहीं '
‘क्या आप मुझे इसका मतलब समझाएंगी।'
‘किसी से कहना मत, लेकिन मुझे यहां आए एक हफ़्ता ही हुआ है और मुझे दस लड़के प्रपोज़ कर चुके हैं। वे सभी आईआईटीयंस थे।'
तो मेरा अनुमान सही था, उस पर बहुत सारे लड़कों की नज़र थी। लेकिन मैं चाह रहा था कि इन लड़कों में मेरे लोग शामिल न हों।
‘किस बात का प्रपोज़ल? '
‘अरे वही, बाहर घूमने जाना, दोस्ती करना, वग़ैरह-वग़ैरह। और हा आईआईटी चेन्नई के एक लड़के ने तो शादी का प्रपोज़ल ही रख दिया।'
‘वाक़ई?’
‘हाँ, उसने कहा कि यह हफ़्ता उसके लिए बहुत ख़ास रहा है। उसने आईआईएमए जॉइन किया और अब उसे उसकी लाइफ़ पार्टनर भी मिल गई। हो सकता है मैं ग़लती कर रही होऊं, लेकिन मेरे ख़्याल से उसने कुछ ज्वेलरी भी पहन रखी थी।'
मैंने अपना सिर पीट लिया। नहीं, मेरे अपने यार-दोस्त ऐसा नहीं कर सकते, चाहे किसी भी तरह के हालात क्यों न हों।
‘अब तुम समझे कि मुझे तुम्हारे आईआईटीयन होने को लेकर इतनी फिक्र क्यों हो रही थी,’ उसने एक चिकन ब्रेस्ट उठाते हुए कहा।
‘ओह, तो यह नेचरल रिएक्शन है। यदि मैं आईआईटी से हूँ, तो मैं तुम्हें दस मिनट के भीतर प्रपोज़ कर ही दूँगा?'
‘मैंने यह तो नहीं कहा।'
‘लेकिन तुम्हारा यही मतलब था।'
‘आई एम सॉरी।'
‘इट्स ओके। मैंने तुम्हारे बारे में कुछ यही उम्मीद की थी। लेट मी गैस–अमीर माता-पिता की इकलौती संतान?'
“ग़लत, ग़लत, मेरा एक छोटा भाई है। और मेरे पापा चेन्नई में बैंक ऑफ़ बड़ौदा में काम करते हैं। सॉरी, तुमने मेरे बारे में क्या उम्मीद की थी?'
‘कुछ लड़कियाँ बहुत ज़्यादा अटेंशन हैंडल नहीं कर पाती हैं। महज़ दो दिन की पॉपुलैरिटी के बाद उन्हें लगता है कि कॉलेज के हर लड़के को उनके सामने अपना सिर झुकाना चाहिए।'
‘यह सच नहीं है। क्या मैं तुम्हारे साथ बाहर नहीं आई?’ उसने बड़े करीने से चिकन की हड्डियां दूसरी प्लेट में रख दीं।
‘ओह, यह तो बहुत बड़ी बात है। मेरे जैसे कॉमनर के साथ घूमने आना। बिल कितना हुआ? मैं अपना हिस्सा चुकाकर चला जाता हूं’ मैं खड़ा हो गया।
‘हे,’ उसने कहा।
‘व्हाट?'
‘आई एम सॉरी। प्लीज़ बैठ जाओ।'
वैसे भी बातचीत में मेरी अब कोई दिलचस्पी नहीं रह गई थी। यदि एक ख़ूबसूरत लड़की से ज़्यादा आकर्षक और कुछ नहीं हो सकता तो एक नकचढ़ी लड़की से ज्यादा बुरा भी कुछ नहीं हो सकता।
मैं बैठ गया और अगले दस मिनट तक खाने और उस नीरस इंस्ट्रुमेंटल म्यूज़िक पर ध्यान केंद्रित करता रहा। मैं उस ब्राह्मण लड़की को नज़रअंदाज़ कर रहा था, जिसने मेरे कॉलेजमेट्स को एक आम श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया था।
‘क्या अब सब ठीक है?’ उसने हिचकिचाहट के साथ मुस्कुराते हुए कहा।
‘तुम मेरे साथ क्यों आई? अपने स्कोर को ग्यारह तक पहुंचाने के लिए?'
‘तुम वाक़ई जानना चाहते हो?'

‘हाँ।'

‘मुझे यहाँ कुछ दोस्तों की ज़रूरत है। तुम मुझे एक सेफ़-ज़ोन लड़के की तरह लगे। एक ऐसे लड़के की तरह, जो किसी लड़की के साथ केवल दोस्ती तक सीमित रह सकता है, राइट?'

बिल्कुल नहीं, मैंने सोचा। आखिर कोई लड़का किसी लड़की के साथ दोस्ती तक ही सीमित क्यों रहना चाहेगा? यह तो किसी चॉकलेट केक के पास रहकर उसे न खाने जैसा होगा। यह तो किसी रेसिंग कार में बैठकर उसे ड्राइव न करने जैसा होगा। ऐसा तो केवल भोंदू ही करते है।

‘आई एम नॉट श्योर,’ मैंने कहा।

‘तुम हैंडल कर सकते हो। मैंने तुम्हें प्रपोज़ल्स के बारे में बताया, क्योंकि तुम देख सकते हो कि वे कितने स्टुपिड हैं।'

‘वे स्टुपिड नहीं हैं। वे आईआईटीयंस हैं। बात केवल इतनी है कि वे अभी तक यह नहीं जानते कि लड़कियों से कैसे बातें की जाती हैं,’ मैंने कहा।

‘जो भी हो। लेकिन तुम्हें पता है लड़कियों से कैसे बातें की जाती हैं। और मैं तुमसे दोस्ती करना चाहूंगी। जस्ट फ्रेंड्स, ओके?’ उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने अनमने ढंग से उससे हाथ मिलाया।

‘लेट्स शेयर, दोनों साठ-साठ देते हैं,’ बिल आने पर उसने कहा।

ठीक है, ‘जस्ट फ्रेंड्स’ शेयर बिल्स। मैं उसके साथ केवल दोस्ती तक ही सीमित नहीं रहना चाहता था, लेकिन मैं ग्यारहवाँ शहीद भी नहीं होना चाहता था।

मैंने अपना हिस्सा चुकाया और कैम्पस लौट आया। मुझे अपनी जस्ट फ्रेंड से जल्द ही फिर मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं थी।